संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो । मेरे सभी रोज ऑफ शेरोन चर्च के सदस्यों और पाठकों को नए साल की बहुत–बहुत बधाई और शुभकामनाएं। हमारे जीवित प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, आने वाले वर्ष में आप में से प्रत्येक का मार्गदर्शन करें, और आप हमेशा उनकी छाया में रहें।

नीतिवचन 8:34 ''क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता, वरन् मेरी डेवढ़ी पर प्रतिदिन खड़ा रहता, और मेरे द्वारों के खंभों के पास दृष्टि लगाए रहता है।''

मेरी डेवढ़ी पर प्रतिदिन खड़ा रहता – इसका क्या अर्थ है? इस्राएलियों ने उस मन्ना से बल प्राप्त किया जो हमारे यहोवा परमेश्वर ने उन्हें प्रतिदिन दिया था। जब उन्होंने मन्ना खाया, तो उनके शरीर से बदबू नहीं आई, और न ही उन्हें कोई बीमारी हुई। परमेश्वर ने जंगल में उनकी सारी ज़रूरतें पूरी कीं, लेकिन परमेश्वर ने उनके लिए एक आज्ञा रखी, अर्थात्, प्रतिदिन मन्ना इकट्ठा करना। निर्गमन 16:4 ''तब यहोवा ने मूसा से कहा, "देखो, मैं तुम लोगों के लिये आकाश से भोजन वस्तु बरसाऊँगा; और ये लोग प्रतिदिन बाहर जाकर प्रतिदिन का भोजन इकट्ठा करेंगे, इससे मैं उनकी परीक्षा करूँगा कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेंगे कि नहीं।''

वही आज्ञा यहोवा आज हमें देते है, जैसा कि नीतिवचन 8:34 में दिया गया है, ''क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी सुनता, वरन् मेरी डेवढ़ी पर प्रतिदिन खड़ा रहता, और मेरे द्वारों के खंभों के पास दृष्टि लगाए रहता है।'' प्रभु परमेश्वर उम्मीद करते हैं कि हमारी हर स्थिति या अनुभव के बावजूद, हमें हमेशा प्रभु की प्रतीक्षा करनी चाहिए, और प्रतिदिन! वचन के माध्यम से उनकी आवाज सुनने के लिए सतर्क रहना चाहिए।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को चालीस वर्ष तक आज्ञा दी थी, कि वे प्रतिदिन मन्ना इकट्ठा करें। परमेश्वर उन्हें एक सप्ताह, या एक महीने के लिए जमा करने के लिए मन्ना दे सकते थे। लेकिन बाइबल कहता है कि परमेश्वर उनकी परीक्षा लेना चाहते थे, कि वे उनकी आज्ञाओं का पालन करेंगे या नहीं करेंगे। इसी तरह, आज के समय में, हमें भी विश्वास में प्रतिदिन प्रभु की प्रतीक्षा करनी चाहिए, और इस प्रतीक्षा अवधि के दौरान, हमें उनके वचन पर भरोसा करना चाहिए, और उनके द्वारा दी गई आज्ञाओं के अनुसार चलना चाहिए।

आज का स्वर्गीय मन्ना, 'परमेश्वर के वचन' का प्रतीक है। जब हम प्रतिदिन दिन और रात में जीवित वचन पर ध्यान करते हैं, तो हम सफल होंगे, और अपने जीवन में महान चीजें हासिल करेंगे।

मत्ती 16:19 ''मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा : और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।''

जैसा कि कहते हैं, बड़ी ताकत के साथ बड़ी जिम्मेदारी आती है! इसी तरह, हमारे प्रभु परमेश्वर ने हमें यह शक्ति दी है कि जो कुछ हम पृथ्वी पर बाँधेंगे वह स्वर्ग में बंधेगा, जो कुछ

हम पृथ्वी पर छोड़ेंगे, वह स्वर्ग में छोड़ा जाएगा। हमें इस शक्ति का उपयोग बहुत सावधानी से करना चाहिए, और केवल प्रभु की आत्मा ही हमें सिखाएगी कि कैसे इस शक्ति का उपयोग प्रभु की इच्छा के अनुसार किया जा सकता है। नहीं तो जैसे आदम और हव्वा ने अपने आप को धोखा दिया और शैतान के हाथों में पड़ गए, वैसे ही हम खुद को मूर्ख बना लेंगे और दुश्मन के खेल में फंस जाएंगे।

हमारा जीवन कभी आसान नहीं होगा; यह कठिन हो जाएगा, लेकिन हमें प्रभु के लिए अपनी लड़ाई कभी नहीं छोड़नी चाहिए, क्योंकि अंत में केवल परमेश्वर की ही जीत होती है। हमें विश्वास होना चाहिए कि हमारे परीक्षण और क्लेश जो भी हों, हमारे परमेश्वर हमें कभी नहीं छोड़ेंगे। हालाँकि, हमें अपनी ओर से हमेशा प्रभु परमेश्वर की आज्ञाकारिता के लिए तैयार रहना चाहिए जिन्होंने हमें प्रेम, खुशी, आनंद और शांति प्रदान की है।

परमेश्वर आने वाले वर्ष में आप सभी को भरपूर आशीष दें।

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

अपने जीवन में उज्जियाह को यशायाह से बदल दें!

प्रेरितों 26:19 "अतः हे राजा अग्रिप्पा, मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली, जब एक पापी जीवन का अंत होता है, उस समय एक नया धर्मी जीवन शुरू होता है। जहां उज्जियाह जैसा जीवन समाप्त होता है, वहीं से यशायाह जैसा जीवन आरम्भ होता है। आइए हम पढ़ें नीतिवचन 29:18 ''जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य होता है।'' जब उज्जियाह जैसा जीवन समाप्त हो जाता है, तब यशायाह के समान एक नया जीवन आरम्भ होता है। जब पाप का जीवन समाप्त होता है, तो पवित्रता का जीवन शुरू होता है। यीशु ने कहा है मरकुस 2:21–22 में ''कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता; नहीं तो वह पैवन्द उसमें से कुछ खींच लेगा, अर्थात् नया, पुराने से, और वह पहले से अधिक फट जाएगा। 22नये दाखरस को पुरानी मशकों में कोई नहीं रखता, नहीं तो दाखरस मशकों को फाड़ देगा, और दाखरस और मशकें दोनों नष्ट हो जाएँगी; परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरा जाता है।'' यीशु ने कहा है कि जब पुराने वस्त्र से नया वस्त्र सिल दिया जाता है, तो नया भी फट जाता है। इस प्रकार, यह महत्वपूर्ण है कि हम अग्नि से अभिषेक के जीवन के लिए प्रार्थना करें, यह हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है। ताकि हम शैतान की हर योजना को नष्ट कर सकें। हम जानते हैं कि नबी यशायाह पवित्र मंदिर में आए थे, उन्होंने एक बहुत ही पवित्र दर्शन देखा, उस दृष्टि में उन्होंने आग की लपटों से अभिषेक का अनुभव किया। आइए हम पढ़ें प्रकाशितवाक्य 1:14 ''उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन् पाले के समान उज्ज्वल थे, और उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं।'' इस पवित्र दर्शन में यशायाह ने प्रभु को बर्फ की परत के रूप में सफेद देखा और उनकी आंखें धधकती आग की तरह थीं। स्वर्ग से इस धधकती हुई आग से घिरा हुआ व्यक्ति ही ऐसे खुलासे कर सकता है। योएल 2:28 कहता है '''उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तुम्हारे बेटे–बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।'' यह धधकती आग जब इस धरती पर उतरेगी, तो सभी लोग भविष्यवाणी करेंगे। इस प्रकार प्रेरित पौलुस ने कहा, "मैं इस पवित्र दर्शन से अनजान नहीं हूं। वह कहते हैं कि यह मेरे लिए नया नहीं है, मैंने इसका अनुभव किया है और इसे जानता हूं।" जब यीशु अपने दूसरे आगमन में आएंगे, तो इस पृथ्वी पर ऐसे शक्तिशाली कार्य होंगे। इसे अपने जीवन में ग्रहण करने और इसका उत्सव मनाने के लिए, हमें उज्जियाह जैसे जीवन को त्याग देना चाहिए और यशायाह की तरह का जीवन हम में जन्म लेना चाहिए। हमें उज्जियाह के हर गुण को हम में दफन कर देना चाहिए, आइए हम पढ़ें 2 इतिहास 26:16 में ''परन्तु जब वह सामर्थी हो गया, तब उसका मन फूल उठा; और उसने बिगड़कर अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वासघात किया, अर्थात् वह धूप की वेदी पर धूप जलाने को यहोवा के मन्दिर में घुस गया।'' उज्जियाह एक बहुत ही घमंडी राजा था। हमें याद रखना चाहिए कि जब हमारे भीतर अभिमान हो तो हम अपने जीवन को विनाश की ओर ही ले जा सकता हैं। यशायाह में भी इस तरह का स्वभाव था, लेकिन आइए हम पढ़ें यशायाह 6:5 ''तब मैं ने कहा, "हाय! हाय! मैं नष्ट हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ; और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ, क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है!'' नबी यशायाह ने प्रभु परमेश्वर के दर्शन को देखा था, इस प्रकार उन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया और प्रभु

ने उसके होंठों को छुआ और उसे पवित्र किया। जब हम यशायाह की तरह नम्र होते हैं और परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो उज्जियाह जैसा स्वभाव हमें छोड़ देता है और यशायाह प्रकार का स्वभाव हम में प्रवेश करता है। हम विनम्र और बुद्धिमान बनते हैं। हमें हमेशा यशायाह जैसी आत्मा के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। यदि हम आगे के मार्ग को पढ़ें, तो परमेश्वर ने साराप स्वर्गदूत को भेजा और जलते कोयले से यशायाह के होंठों को छुआ और उसके होंठों को पवित्र किया। जब तक हमारे पापों को स्वीकार नहीं किया जाता, हम परमेश्वर के पवित्र दर्शन की अपेक्षा नहीं कर सकते या हमारे पापों से मुक्त नहीं हो सकते। जब तक उज्जियाह हमारे भीतर मर नहीं जाता, तब तक हमारे भीतर नया यशायाह पैदा नहीं हो सकता।

हम जानते हैं कि जब शक्तिशाली परमेश्वर ने यशायाह के जीवन को छुआ, तो उसका जीवन बदल गया। लोगों ने यशायाह के जीवन में एक बदले हुए स्वभाव को देखा और वह एक महान भविष्यवक्ता बन गया। यशायाह के जीवन में यह महान और शक्तिशाली कार्य है। यीशु ने कहा लूका 16:15 में ''उसने उनसे कहा, "तुम तो मनुष्यों के सामने अपने आप को धर्मी ठहराते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान् है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है।'' हम में से बहुत से लोग अभी भी उज्जियाह के स्वभाव का पालन–पोषण करते हैं और धर्मी होने का दिखावा करते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि हम इंसान को बेवकूफ बना सकते हैं प्रभु को नहीं। परमेश्वर समझते है कि मनुष्य अधर्मी और अशुद्ध है क्योंकि उज्जियाह अभी भी हमारे भीतर जीवित है, तो हम परमेश्वर से कुछ भी उम्मीद नहीं कर सकते। हम मनुष्यों के सामने महान होने का दिखावा कर सकते हैं, लेकिन यीशु के सामने सब कुछ घृणित है। हमारा जीवन एक टूटे हुए मिट्टी के बर्तन की तरह है, जो बेकार हो जाता है 'किसी काम का नहीं'। इस प्रकार, वचन कहता है कि हम यहोवा के लिए घृणित बनेंगे। हमारे ह्रदय में पश्चाताप के बिना, हम उसके लिए एक शुद्ध बर्तन नहीं बन सकते जब तक कि पुराना स्वयं मर नहीं जाता। पवित्र मंदिर में हम खुद को कहाँ पवित्र कर सकते हैं। जैसे यशायाह पवित्र मंदिर में भागा, वह प्यासा था, भूखा था, उसे यहोवा के लिए भय और प्रेम था। इस पवित्र मंदिर में, जब यशायाह ने इस महान दर्शन को प्राप्त किया, तो वह चिल्लाया "प्रभु मैं अशुद्ध हूँ, मैं अशुद्ध लोगों के बीच रहता हूँ"। लेकिन उस पवित्र मंदिर में परमेश्वर ने यशायाह के जीवन को बदल दिया और उसे शुद्ध किया।

हम सब ही पवित्र मंदिर में आते हैं, परमेश्वर जानते है कि हम भीतर से अशुद्ध हैं, यद्यपि हम लोगों के सामने शुद्ध और धर्मी दिखाई दे सकते हैं, जब वे हमें बाहरी रूप में देखते हैं। इस प्रकार, हमें आज अपने जीवन की जांच करने की जरूरत है, हमें अपने दिल के कोने–कोने में खोजने की जरूरत है और गर्व, अहंकार की जांच करने की जरूरत है। हमें इसे अपने जीवन से काट देना चाहिए। हमें अपने पापों से खुद को अलग करना चाहिए, हमें इसे अपने जीवन से उखाड़ फेंकना चाहिए। हर हफ्ते को हम आते हैं और वचन सुनते हैं, लेकिन हम अपने जीवन को बेहतर होने के लिए नहीं बदलते हैं, एक दिन प्रभु कहेंगे कि तुम भले ही चिल्लाओ "हे प्रभु, हे प्रभु, हे प्रभु", लेकिन प्रभु कहेंगे "मैं तुम को नहीं जानता"। परमेश्वर का शुद्ध पात्र बनने के लिए, हमें अपने भीतर के उज्जियाह जैसे जीवन को नष्ट करना होगा, जब तक कि हम ऐसा न करें कि हम अपने जीवन को शुद्ध नहीं कर सकते। लूका 16:15 ''उसने उनसे कहा, "तुम तो मनुष्यों के सामने अपने आप को धर्मी ठहराते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को

जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान् है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है।'' लोग कहेंगे कि हम बहुत प्रतिभाशाली और बहुत अच्छे हैं, लेकिन प्रभु परमेश्वर की दृष्टि में हम अशुद्ध हैं। इस प्रकार, हमें आज अपने पापों से बाहर निकलने का प्रयास करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यशायाह ने पवित्र मंदिर में यहोवा को पुकारा था। धधकती हुई आग ने उसके होठों को छूकर उसे बदल दिया, और उसे यहोवा के लिए शुद्ध पात्र बना दिया। हम भी परमेश्वर के पवित्र मंदिर में आते हैं, आइए हम अपने पापों को स्वीकार करें और अपने आप को पापी जीवन से अलग करें।

हम हन्ना की दुखद कहानी जानते हैं। एक दिन वह परमेश्वर के सामने पवित्र मन्दिर में भागी और यहोवा की दोहाई दी, यहोवा ने उसी क्षण पवित्र मन्दिर में उसे उत्तर दिया। हमारे जीवन में कई कमियां आती हैं, लेकिन जब हम अपने प्रभु को विश्वास में पुकारते हैं, तो वह हमारे दुख और दर्द को दूर करने के लिए तैयार होते हैं। दाऊद कहता है भजन संहिता 122:1 में (दाऊद की उपाधियों का एक गीत।) ''जब लोगों ने मुझ से कहा,"आओ, हम यहोवा के भवन को चलें," तब मैं आनन्दित हुआ।'' यहाँ हम देखते हैं कि दाऊद यहोवा के पवित्र मन्दिर में आकर कितना आनन्दित हुआ। यह प्रभु के पवित्र मंदिर में है कि हम अपने बोझ को कम कर सकते हैं, हम अपने पाप और बीमारी से मुक्ति पा सकते हैं, हम अपना आशीष भी प्राप्त कर सकते हैं। सुलैमान ने मनदिर को बनाया, और जब उस ने पवित्र मनदिर में यहोवा के लिए बलिदान किया, तब यहोवा ने कहा, हम पढ़ते हैं 2 इतिहास 7:15 ''अब से जो प्रार्थना इस स्थान में की जाएगी, उस पर मेरी आँखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे।'' जिस परमेश्वर ने यशायाह को शुद्ध किया, वही परमेश्वर था जिसने हन्ना की प्रार्थनाओं को सुना और उनका उत्तर दिया और उसे फलदायी बनाया और उसका बांझपन दूर किया। यह वही परमेश्वर है जो हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देंगे, क्योंकि उनकी आंखें देखेंगी और इस पवित्र मंदिर में की जाने वाली हर प्रार्थना के लिए उनके कान खुले हैं। हमें हमेशा आशा और विश्वास रखना चाहिए कि हमारी प्रार्थनाओं के लिए प्रभु के कान खुले हैं, वह जवाब देंगे और हमें जीत दिलाएंगे। इस पवित्र मंदिर में हमारा यही विश्वास होना चाहिए। यह सब प्रतिज्ञा और गवाही, परमेश्वर के महान कार्य हैं। इस प्रकार, यह दर्ज है कि हम इस तरह प्रार्थना कर सकते हैं और अपने जीवन को परमेश्वर के हाथों में सौंप सकते हैं।

हमारे लिए परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित रहना महत्वपूर्ण है, इस प्रकार आइए हम पढ़ें यूहन्ना 17:3 ''और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।'' हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम पिता परमेश्वर और उनके इकलौते पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करें और जब हम उन पर विश्वास करेंगे तो हमारे पास अनन्त जीवन होगा। यूहन्ना 7:16 कहता है ''यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है।'' यीशु मसीह जानते थे कि लोगों के विचार भिन्न थे और वे उनकी शिक्षाओं से ईर्ष्या करते थे। प्रभु यीशु उनके दिलों की जाँच कर सकते थे, और उनके मन को भी पढ़ सकते थे। यीशु मसीह लोगों के दिलों और विचारों को प्रत्यक्ष रूप से देख सकते थे। यीशु ने दृष्टान्तों में कहा, "मुझे दिया गया वचन मेरे पिता परमेश्वर द्वारा है"। यीशु मसीह ने उस वचन का प्रचार किया जो स्वर्ग में उनके पिता ने उसे दिया था। इस प्रकार, उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे अविश्वास न करें या नाराज न हों, उनके द्वारा प्रचारित वचन से ईर्ष्या या क्रोधित न हों क्योंकि वचन परमेश्वर की ओर से था और यह उसका अपना नहीं था। जिस

परमेश्वर ने तुम्हें और मुझे बनाया है, उसने यह वचन दिया है, यूहन्ना 7:17 कहता है, ''यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि यह परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से कहता हूँ।'' जो बदलने के लिए तैयार हैं, 'बदलें' प्रभु यीशु कहते हैं, क्योंकि यह वचन सीधे स्वर्ग के सिंहासन से आया है यानी पिता परमेश्वर से। आज भी परमेश्वर हमारे साथ है, जो कोई भी उनका अनुसरण करने और उनके वचन और आज्ञा का पालन करने का प्रयास करेगा, वह वचन को समझेगा और उसे स्वीकार करेगा। परन्तु जिन में उज्जियाह का आत्मा है, वे सच्चे वचन को स्वीकार नहीं करेंगे। इस प्रकार, यह महत्वपूर्ण है कि यशायाह हमारे जीवन में पैदा हो, उज्जियाह को मरना चाहिए। जो प्रभु का भय मानते और जो प्रभु से प्रेम करते हैं वे जान लेंगे कि यह पिता परमेश्वर का वचन है। यूहन्ना 14:24 कहता है ''जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता; और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है, जिसने मुझे भेजा।'' यीशु ने कहा, "जो मुझ से प्रेम नहीं करते, वे मेरे वचन को नहीं मानेंगे। आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यदि हम परमेश्वर से प्रेम नहीं करते हैं, चाहे मैं वचन का कितना ही प्रचार करूं, वह आपके हृदयों को कभी नहीं छूएगा।" तौभी, यीशु कहते हैं कि यह मेरा वचन नहीं है, परन्तु ऊपर पिता की ओर से है जिस ने मुझे भेजा है। इस प्रकार, जो मुझ से प्रेम नहीं रखते, वे इस वचन पर विश्वास नहीं करेंगे। यदि हम वचन पर विश्वास करते हैं, तो वचन हमारे जीवन में काम करेगा और हमारे जीवन को बेहतर होने के लिए बदल देगा। जब हम उनके वचन पर विश्वास करते हैं, तो हम निश्चित रूप से अपने जीवन में परमेश्वर के पराक्रमी कार्यों को देखेंगे। उज्जियाह हमारे जीवन में मर जाएगा और यशायाह हमारे भीतर पैदा होगा। हम प्रभु परमेश्वर के सामने लुका–छिपी नहीं खेल सकते, जब हम प्रभु का भय मानते हैं तो हमारे भीतर एक नए जीवन का जन्म होगा।

भजन संहिता 91:14 ''उसने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊँगा, मैं उसको ऊँचे स्थान पर रखूँगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।'' यीशु ने कहा यूहन्ना 14:24 में, ''जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता; और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है, जिसने मुझे भेजा।'' इसलिए जब हम यह स्वीकार करते हैं कि वचन स्वर्ग में हमारे पिता की ओर से है, तो वादा किया गया वचन है भजन संहिता 91:14 में ''उसने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊँगा, मैं उसको ऊँचे स्थान पर रखूँगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।'' जो की हमारे लिए है। हमारा परमेश्वर पक्षपात करनेवाला परमेश्वर नहीं है, वह बदलता नहीं है बल्कि हमें अपने दुष्ट जीवन से बदलना चाहिए। हमारी इच्छा नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा जो स्वर्ग और पृथ्वी जितनी ऊंची है। हम नबी एलिय्याह की कहानी जानते हैं, वह राजा अहाब के सामने साहस के साथ खड़ा हुआ और कहा 1 राजा 17:1 ''तिशबी एलिय्याह जो गिलाद के परदेसियों में से था, उसने अहाब से कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी।'' एलिय्याह राजा के सामने खड़े होने के योग्य था, क्योंकि उसके साथ परमेश्वर यहोवा की उपस्थिति थी। प्रकाशितवाक्य 21:5–7 कहता है ''जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, "देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।" फिर उसने कहा, "लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये बातें पूरी हो गई हैं। मैं अल्फा और ओमेगा, आदि और अन्त

हूँ। मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊँगा। जो जय पाए वही इन वस्तुओं का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा।'' हमारे लिए विजय प्राप्त करना महत्वपूर्ण है जब हम प्रभु परमेश्वर के साथ जुड़ जाते हैं जो "अल्फा और ओमेगा, आदि और अंत" हैं। जब हम इस पृथ्वी पर रहते हैं और उनकी आज्ञा और वचन का पालन नहीं करते हैं, तो हम कभी भी परमेश्वर के राज्य तक नहीं पहुंच पाएंगे। जब यीशु मसीह इस धरती पर रहते थे, तब तक उन्होंने केवल अपने पिता की इच्छा को तब तक पूरा किया जब तक उन्हें सूली पर नहीं चढ़ाया गया। उसके बाद, यीशु को बादल में ले लिया गया, जबकि लोग उसे देख रहे थे। हम स्वर्ग कैसे जाएंगे? क्या हम भी बादल द्वारा उठाए जाएंगे? वचन कहता है कि हम सब को उठाया जाएगा, कैसे? वचन कहता है, जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे उकाब की तरह उड़ेंगे यशायाह 40:31 ''परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे, वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।'' तो हमारे जीवन में ये पंख क्या हैं, यानी प्रार्थना और स्तुति। ये अकेले हमारे पंख हैं और इसलिए ये पंख हमें स्वर्ग तक उठाएंगे। प्रार्थना और स्तुति हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। प्रभु हमारी हर आवाज को पहचानते हैं, इसलिए हमें अपने ह्रदय की गहरायिओं से स्तुति करनी चाहिए, यह एक मीठी सुगंध के रूप में प्रभु तक पहुंचती है। हमारे शरीर का हर अंग प्रभु परमेश्वर के लिए एक साधन है, इस प्रकार जब यीशु हमें लेने के लिए आएंगे, तो यह हमारी प्रार्थना है और केवल स्तुति ही हमारे पंख बन जाएंगे और हम उनके पास उठा लिए जाएंगे।

इसलिए, जो लोग प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं, जो उनके प्रतिज्ञा और वचन पर विश्वास करते हैं, वे उकाब की तरह उड़ेंगे। प्रेरितों के काम 1:9 ''यह कहकर वह उन के देखते–देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया।'' किसी ने बादल को उतरते नहीं देखा, परन्तु उन्होंने यीशु को एकाएक बादल द्वारा उठाये जाते देखा। इस प्रकार हम भी अपनी प्रार्थना और प्रभु परमेश्वर की स्तुति में उठाये लिए जाएंगे।

आइए आज हम अपने भीतर उज्जियाह के जीवन को समाप्त करने का प्रयास करें और यशायाह को हमारे भीतर जन्म लेने का प्रयास करें। इस प्रकार, दाऊद भजन संहिता 34:1 में कहता है (''दाऊद का भजन, जब वह अबीमेलेक के सामने पागल–सा बना, और अबीमेलेक ने उसे निकाल दिया, और वह चला गया) मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।'' याद रखें केवल प्रार्थना और स्तुति हमें परमेश्वर के राज्य की ओर ले जाने के लिए पंख बन जाएगी। प्रकाशितवाक्य 19:1–3 कहता है ''इसके बाद मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, "हल्लिलूय्याह! उद्धार और महिमा और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर ही की है। क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं। उसने उस बड़ी वेश्या का, जो अपने व्यभिचार से पृथ्वी को भ्रष्ट करती थी, न्याय किया और उससे अपने दासों के लहू का बदला लिया है।" फिर दूसरी बार उन्होंने कहा, "हल्लिलूय्याह! उसके जलने का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा।" इज़ेबेल की शादी राजा अहाब से हुई थी, उसने राजा को अपने साथ जोड़े रखा और इस तरह परमेश्वर के कई नबियों को मार डाला। हम इस धरती पर ईज़ेबेल के दुखद अंत को जानते हैं। लेकिन आज, उसकी आत्मा ने बहुतों को पकड़ लिया है और इस दुनिया में कई लोगों के माध्यम से काम कर रही है। ईज़ेबेल की आत्मा परमेश्वर के याजकों और नबियों को नीचे लाने का प्रयास करती है। परन्तु जब एलिय्याह

ईज़ेबेल के सामने निडर खड़ा हुआ, तो उसने उसे एक पत्र लिखा, जिसमें उसे गंभीर परिणामों की चेतावनी दी गई थी। क्योंकि एलिय्याह ने बाल के बहुत से भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला था, इस प्रकार ईज़ेबेल उसे मारने की कोशिश कर रही थी। एलिय्याह ईज़ेबेल को चेतावनी देने के बाद उसके पास से भागते–भागते थक गया था। एलिय्याह शारीरिक रूप से कमजोर था, लेकिन जैसा कि वचन 2 में कहा गया है, **वेश्या की आत्मा से ईज़ेबेल को नष्ट कर दिया जाएगा।** आज भी इज़ेबेल की आत्मा सेवकों और परमेश्वर के जीवन में थकान, दुःख, आत्महत्या की भावना और पीड़ा लाती है। परन्तु जिस प्रकार परमेश्वर ने एलिय्याह को भोजन और पानी प्रदान किया, जिससे एलिय्याह को और चालीस दिन और रात दौड़ने के लिए मजबूत किया गया था, वही परमेश्वर हमें वेश्या की आत्मा ईज़ेबेल का सामना करने की शक्ति प्रदान करेगा। आइए पढ़ें 1 राजा 19:1–4 कहता है ''तब अहाब ने ईज़ेबेल को एलिय्याह के सब काम विस्तार से बताए कि उसने सब नबियों को तलवार से किस प्रकार मार डाला। तब ईज़ेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत के द्वारा कहला भेजा, "यदि मैं कल इसी समय तक तेरा प्राण उनका–सा न कर डालूँ तो देवता मेरे साथ वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करें।" यह देख एलिय्याह अपना प्राण लेकर भागा, और यहूदा के बेर्शेबा को पहुँचकर अपने सेवक को वहीं छोड़ दिया। परन्तु वह स्वयं जंगल में एक दिन के मार्ग पर जाकर एक झाऊ के पेड़ के तले बैठ गया, वहाँ उसने यह कह कर अपनी मृत्यु माँगी, "हे यहोवा, बस है; अब मेरा प्राण ले ले, क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा नहीं हूँ।'' इस प्रकार, आज हमारे लिए यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा है, कि वह इस पृथ्वी पर वेश्या की आत्मा ईज़ेबेल को नष्ट कर देगा। जब परमेश्वर की आत्मा हमारे भीतर होती है तो हम अपने जीवन में इस प्रकाशन को समझ सकते हैं, अन्यथा हम भी आत्मा में, हमारे जीवन में टूट जाएंगे। इस प्रकार, हमारे जीवन पर प्रभु की कृपा का होना महत्वपूर्ण है और हम धन्य होंगे। याद रख, हमें यशायाह बनना है और इस प्रकार हमारे भीतर उज्जियाह के जीवन का अंत करना है। प्रकाशितवाक्य 4:8–11 कहता है ''चारों प्राणियों के छः छः पंख हैं, और चारों ओर और भीतर आँखें ही आँखें हैं; और वे रात दिन बिना विश्राम लिये यह कहते रहते हैं, "पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था और जो है और जो आनेवाला है।" जब वे प्राणी उसकी जो सिंहासन पर बैठा है, और जो युगानुयुग जीवता है, महिमा और आदर और धन्यवाद करेंगे; तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के सामने गिर पड़ेंगे, और उसे जो युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और वे अपने–अपने मुकुट सिंहासन के सामने यह कहते हुए डाल देंगे, "हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा और आदर और सामर्थ्य के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएँ सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं और सृजी गईं।'' जैसा कि वचन कहता है – स्वर्ग में, दिन और रात प्रभु परमेश्वर के लिए गीत और आनन्द मनाया जाता है। इस प्रकार, प्रभु की उपस्थिति में निरंतर स्तुति और आराधना होती है, स्वर्गदूतों और धर्मी लोगों ने अपने मुकुट अलग रख दिए और प्रभु परमेश्वर की स्तुति और आराधना शुरू कर दी। इसलिए, हमें एक विनम्रता से प्रभु के सामने गर्व और अहंकार के बिना होना चाहिए। हमें अपने जीवन को पुनर्स्थापित करना चाहिए और यशायाह बनना चाहिए और इस प्रकार हमारे भीतर उज्जियाह के जीवन का अंत करना चाहिए।

यह वचन सब को आशीष लाए। प्रभु की स्तुति हो !

पास्टर सरोजा म।